कृषि वानिकी एवं पर्यावरण का पुनरुद्धार

विषय: कृषि वानिकी एवं पर्यावरण के पुनरुद्धार के संबंध में विस्तृत वार्ता

कृषि वानिकी एवं पर्यावरण के पुनरुद्धार के विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। चर्चा के दौरान बताया गया कि वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वनों की कटाई तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण पर लगातार दबाव बढ़ रहा है। इसका सीधा प्रभाव कृषि, जल संसाधनों, मृदा की उर्वरता, जैव विविधता तथा मानव जीवन पर पड़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में कृषि एवं वानिकी को एक-दूसरे के साथ जोड़कर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है।

कृषि वानिकी एक ऐसी उपयोगी पद्धति है, जिसमें कृषि फसलों के साथ-साथ खेत की मेड़ों, सीमांत भूमि एवं उपयुक्त स्थानों पर वृक्षों का रोपण किया जाता है। इससे किसान एक ही भूमि से अनाज, दलहन, तिलहन, फल, लकड़ी, चारा एवं अन्य उपयोगी उत्पाद प्राप्त कर सकते हैं। कृषि वानिकी के माध्यम से किसानों की आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित किए जा सकते हैं तथा मौसम एवं बाजार से जुड़े जोखिमों को भी कम किया जा सकता है।

वार्ताकार द्वारा मृदा संरक्षण को भी विशेष महत्व दिया गया। वृक्षों की जड़ें मिट्टी को मजबूती प्रदान करती हैं तथा वर्षा के दौरान मृदा के कटाव को रोकने में सहायक होती हैं। पेड़ों की पत्तियों एवं जैविक अवशेषों के विघटन से मिट्टी में जैविक पदार्थ की मात्रा बढ़ती है, जिससे मृदा की उर्वरता एवं जल धारण क्षमता में सुधार होता है। इससे कृषि भूमि की उत्पादकता को लंबे समय तक बनाए रखने में सहायता मिलती है।

जल संरक्षण के संबंध में बताया गया कि वृक्षारोपण एवं कृषि वानिकी जल चक्र को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ वर्षा के पानी को भूमि में पहुंचाने, भूजल पुनर्भरण बढ़ाने तथा मिट्टी में नमी बनाए रखने में सहायक होते हैं। किसानों को खेतों में जल संरक्षण की संरचनाओं, वर्षा जल संचयन तथा कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया।

पर्यावरण के पुनरुद्धार के लिए स्थानीय एवं उपयोगी प्रजातियों के वृक्षों को प्राथमिकता देने पर भी चर्चा की गई। खेतों की मेड़ों, खाली भूमि, सामुदायिक भूमि तथा अन्य उपयुक्त स्थानों पर पौधरोपण करके हरित क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता है। इससे वायु की गुणवत्ता में सुधार, तापमान को नियंत्रित करने, कार्बन का अवशोषण करने तथा जैव विविधता को बढ़ावा देने में सहायता मिलती है। साथ ही, वृक्ष पक्षियों, मधुमक्खियों तथा अन्य लाभकारी जीवों के लिए प्राकृतिक आवास उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चर्चा में यह भी बताया गया कि कृषि वानिकी केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम ही नहीं है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का एक प्रभावी साधन भी है। फलदार, चारा देने वाले, औषधीय एवं इमारती उपयोग वाले वृक्षों का उचित चयन करके किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। कृषि फसलों के साथ वृक्षों का समुचित संयोजन अपनाने से भूमि का बेहतर उपयोग होता है और किसानों को अलग-अलग समय पर विभिन्न प्रकार के उत्पाद प्राप्त होते रहते हैं।

इसके अतिरिक्त, किसानों को रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के संतुलित प्रयोग, जैविक खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट के उपयोग, फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया। फसल अवशेषों को जलाने के बजाय उनका उपयोग खाद बनाने, मल्चिंग तथा पशु आहार आदि में किया जा सकता है। इससे वायु प्रदूषण कम करने के साथ-साथ खेत की मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ाने में सहायता मिलती है।

अंत में यह निष्कर्ष निकाला गया कि कृषि वानिकी एवं पर्यावरण का पुनरुद्धार एक सामूहिक जिम्मेदारी है। किसानों, कृषि विशेषज्ञों, वन विभाग, स्थानीय संस्थाओं एवं आम नागरिकों के सहयोग से ही पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को

प्रभावी बनाया जा सकता है। अधिक से अधिक वृक्षारोपण, वृक्षों का संरक्षण, जल एवं मृदा संरक्षण तथा टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाकर प्राकृतिक संसाधनों को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।